हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

एवं

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

के संयुक्त तत्वावधन में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक : 05-06 फरवरी, 2017

प्रतिवेदन/रिपोर्ट

कार्यशाला

कार्यक्रम विवरण	कार्यक्रम का स्वरूप	कार्यक्रम स्थल	अवधि	आयोजक
माध्यमिक स्तरीय हिंदी शिक्षकों के लिए भाषा समृद्धि	राष्ट्रीय कार्यशाला	वाराणसी, उत्तर प्रदेश	05-06 फरवरी, 2017	हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

'माध्यमिक स्तरीय हिंदी शिक्षकों के लिए भाषा समृद्धि विषयक कार्यशाला' (दिनांक 5-6 फरवरी, 2017)

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दिनाँक 5-6 फरवरी, 2017 को राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्याशाला में सात जाने-माने विषय-विशेषज्ञों का व्याख्यान हुआ और इसमें पैंतालीस प्रतिभागी सम्मिलित हुए। विषय-विशेषज्ञ के रूप में प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. अनिल कुमार राय, प्रो. राम किशोर शर्मा, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा एवं डॉ. बीना शर्मा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। वक्ताओं ने इस तरफ ध्यान दिलाने का प्रयास किया कि शिक्षा में अंतरराष्ट्रीय स्कूलों और सूचना प्रौद्योगिकी के प्रवेश के बाद माध्यमिक शिक्षा सहित समस्त शैक्षिक जगत क्रांतिकारी बदलाव के दौर से गुजर रहा है और ऐसी स्थिति में किसी भी सजग समाज का इसके प्रति चिंतनशील होना स्वाभाविक है।

कार्यशाला में अतिथियों तथा विषय-विशेषज्ञों के साथ प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

उन्होंने इस बात के लिए बधाई दी कि हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र इसके प्रति संवेदनशील है। विशेषज्ञों ने चेताया कि पिछले कुछ दशकों में जिस तरह का बदलाव आया है उससे भाषा और खास तौर पर हिंदी भाषा पर बहुत प्रभाव पड़ रहा है। आज की तारीख़ में छात्रों से उसी भाषा में संवाद संभव नहीं है जैसे आज से कुछ दशक पहले था। इसी तरह आज की बाजार प्रभावित भाषा में शिक्षण उनका भाषिक संस्कार नहीं कर सकती इसलिए यह तलवार की धार पर चलना है। अब हिंदी भाषा और शिक्षण का मसला गंभीर हो गया है।

कार्यशाला में सम्मिलित प्रतिभागियों को प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र वितरण के दौरान समूह फोटोग्राफ

वक्ताओं ने कहा कि जब हिंदी शिक्षकों की बात की जा रही है तो इसे थोड़ा विस्तृत अर्थ में ही ग्रहण करना होगा। इसका सामान्य अर्थ तो यह है कि जो एक विषय के रूप में हिंदी को पढ़ाते हैं और विस्तृत अर्थ में जो हिंदी माध्यम से पढ़ाते हैं, संकट दोनों स्तरों पर है इसलिए समाधान भी इकहरा नहीं होगा। दोनों स्तरों को साथ-साथ देखना होगा। मसलन हिंदी के पाठ्यक्रम में जो 'टेक्स्ट' शामिल है उसकी भाषा आज से पाँच सौ साल पहले, पचास साल पहले और आज की भी हो सकती है। एक हिंदी शिक्षक को भाषा के इतने बड़े इतिहास और भूगोल को लेकर चलना होता है और चुनौती यह है कि उसे आज की भाषा में सांस ले रहे छात्र को संप्रेषित करना है, उससे संवाद करना और समझाना है। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभागियों ने सक्रियता से भाग लिया और अपने अनुभवों को साझा किया जिससे विषय को व्यावहारिक जमीन पर समझने में मदद मिली।